RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/2027-29

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 11 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 17 अगस्त 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

दीवान सिंह धर्मशक्तू से बातचीज

रतन सिंह उर्फ डोगनच्यू ज्ञानिमा मंडी में डाकू से भिड़ गये थे

- **नकचंग डौक्यू को देख गरपन के सिपाही दुबक गये थे, तब बूबू रतन ने उसके घोड़े की लगाम पकड़ी और तिब्बती भाषा में बातचीत की**
- **व्यापार के परम्परागत कार्य में माहिर व्यापारी भीमसिंह धर्मशक्तू का बीमारी के कारण से तिब्बत में ही निधन हो गया था**
- **बीआरओ की नौकरी में दीवान सिंह जी को भूटान जाने अवसर मिला और 'गुम्फा' तक रोड कार्य के दौरान रानी ने नमकीन चाय पिलाई**

कार्यालय प्रतिनिधि

इस समय भारत-चीन स्थलीय व्यापार को लेकर बराबर समाचार आ रहे हैं और कोरोना काल के बाद फिर से व्यापार शुरू होने की खुशी भी है। व्यापार का यह पूरा तरीका व्यवहार से ज्यादा प्रतीकात्मक लगता है। व्यापार के उन दिनों को याद कर कम्पन होने लगती है जब पैदल दुर्गम रास्तों से होकर भारत-तिब्बत व्यापार की परम्परा संस्कृति का हिस्सा बन चुकी थी। इस व्यापार में अपने मित्रों से मिलने की ललक और अपने पुस्तैनी कार्य को बनाये रखने की लालसा थी। इस यात्रा और व्यापार में वह खतरा भी था जो किसी भी कालखण्ड में रहा है, जैसे- चट्टान गिरना, प्रकृति का प्रकोप, लुटेरों का आतंक।

ऐसी ही एक सच्चाई जोहार के व्यापारी रतन सिंह उर्फ डोगनच्यू के जीवन में घटी। 'डोगनच्यू' को तिब्बत भाषा में वीर बहादुर लड़ाकू कहा जाता है। उस समय ज्ञानिमा मण्डी में डाकुओं का आतंक मचा हुआ था। इनका लीडर 'नकचंग डोक्यू' था। एक दिन इनके गिरोह ज्ञानिमा मण्डी में चढ़ाई कर दी, ऐसे में गरपन के सारे सिपाही दुबक गये। व्यापारी डर हुए थे। तब रतन सिंह जी ने जाकर लुटेरों के लीडर के घोड़े की लगाम पकड़ ली, अंगूठा खड़ा किया तो वह घोड़े से उतर गया। इसके बाद तिब्बती में उनकी बात हुई और 'लकचंग डोक्यू' अपने गिरोह के साथ वापस लौट गया। इस घटना के अगले साल तिब्बत में खम्पा (लड़ाकू जाति) ने लुटेरों के लीडर को मार डाला और उसकी गर्दन काटकर लटका दिया और हर आने-जाने वाला उसमें थूकता था क्योंकि उसके आतंक से सभी त्रस्त थे। अपने दादा/बूबू की इस वीरता भरी

शेष पृष्ठ 2 पर

खरीद भाव पर बिक्री

चोरी केवल जरूरतमन्द लोग या गरीब ही करते हों, ऐसा नहीं है। मानव स्वभाव का अध्ययन करने वाले लोग बताते हैं कि जिस तरह खेलना, गप्पें लड़ाना या चुगलखोरी करना आदत का एक हिस्सा बन जाता है, उसी तरह चोरी करना भी एक आदत ही है। चोरी की शुरूआत घर से ही होती है, बाद में इसका विस्तार अनुकूल परिस्थितियाँ मिलने पर बढ़ जाता है। कान्वेन्ट स्कूलों में पढ़ाने वाले अध्यापकों को आये दिन यह देखने को मिलता है कि कुछ बच्चे, जिनका मासिक खर्च ही हजार रुपये प्रति माह से अधिक होता है, कभी कभार अपने साथियों की कलम, रबर जैसी छोटी-छोटी चीजें चुरा लेते हैं।

जब स्थिति ऐसी हो तो गाँव के अनपढ़ किशन सिंह की छोटे स्तर की चोरी के लिये उसे दोष देने में तनिक कठिनाई होती है। वह बचपन से ही, छोटी-छोटी चोरियाँ करने लगा था। बहुत बार तो उसने ऐसी चोरियाँ भी की, जिनका आर्थिक महत्व कतई नहीं था। वह धूप में सूखते हुए लोगों के फटे पुराने कपड़े ही उठा लेता। धीरे-धीरे चोरी करना उसकी दिनचर्या का अंग ही बन गया। अब वह गाँव से चीजें उठाकर ले जाता तथा शहर में बेच आता, भले ही एक आध रुपया ही मिलता हो। उसकी देखा देखी में उसका छोटा भाई भी चोरी करने लगा। कुछ चोरियाँ तो दोनों भाई मिलकर करते।

एक बार वह गाँव से एक टिन घी चुराकर बेचने के लिये बाजार चला गया। स्थानीय बाजार में लोग उसे जानने लगे थे, इसलिये किसी ने वह घी नहीं खरीदा। अत: वह घी का कनस्तर पीठ में लादे, बेचने के लिये पैदल ही हल्द्वानी पहुँचा। उन दिनों मोटर गाड़ियाँ इन रास्तों में नहीं चलती थीं। कई दिन की पैदल यात्रा के बाद वह हल्द्वानी पहुँचा। हल्द्वानी पहुँचते पहुँचते रात हो गई, इसलिये उसे दुकानें बन्द मिली। उन दिनों चारों ओर घने जंगल थे, शेर चीतों का आतंक था, इसलिये ग्राहक जल्दी ही खरीददारी करके समय पर घर चले जाते थे। बाजार में सूना होने के कारण दुकानदार भी दुकान जल्दी बन्द कर देते थे। इसलिये चुराया हुआ यह घी वह रात में नहीं बेच सका। उसको जल्दी बेचने की उत्सुकता भी नहीं थी क्योंकि उसने दिन में कई जगह, अच्छी तरह मोलभाव करके, अच्छे पैसों में, माल बेचने विचार किया था। रात को वह एक धर्मशाला में ठहर गया, जिसमें और भी कई यात्री ठहरे हुए थे। किशन दिन भर का थका हुआ था, अत: घी के टिन को पास ही रख कर वह सो गया। उसे तुरन्त गहरी नींद आ गई। सुबह उठकर सबसे पहले उसकी आँखों ने घी के टिन की ओर देखा। पर वहाँ घी का टिन था ही कहाँ! उसने पूरी धर्मशाला में तलाश किया, जो लोग वहाँ ठहरे थे उनसे पूछताछ की, पर वहाँ वह न मिलना था, कोई दबे पाँव घी का टिन उड़ा कर ले चला। अब नत्थू को काटो तो खून नहीं। उसे अपने भाई को तुरन्त खबर भेजनी थी कि 'माल' किस भाव बिका क्योंकि भाई ने आते समय उससे कहा था कि माल बिकते ही तुरन्त चिट्ठी लिखना कि माल किस भाव बिका। उसने तुरन्त अपने भाई को चिट्ठी भेजी- ''भैया मैं यहाँ पर कुशल मंगल से हूँ। माल सही सलामत यहाँ पहुँच गया परन्तु यहाँ पर माल उसी भाव बिक गया, जिस भाव पर गाँव से लाया था।''

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

एसआईआर अभियान : न भ्रम हो न भ्रमित करें

उत्तराखण्ड में गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है। ऐसा अभियान भी क्या है कि जिसमें सांसद, विधायक, नेता, अभिनेता, अधिकारी, कर्मचारी तक को नोटिस थमा दिया गया जो अपने क्षेत्र में स्थापित रहे हैं। ऐसे में आम नागरिकों का नाराज होना स्वाभाविक है। आखिर वर्षों से वोट देने का अधिकार रखने वाले से सवाल हो कि तुम कैसे वोटर? तो वह नाराज होगा ही। ऐसे में जनप्रतिनिधियों ने प्रशासन के पास जाकर गुहार भी लगाई है।

असल में दस्तावेजों, पात्रता, आवेदन प्रक्रिया और सत्यापन को लेकर लोगों में भम की स्थिति बनी हुई है। इसके लिये प्रशासन से मांग की जा रही है कि स्पष्ट, समयबद्ध और सरल व्यवस्था सुनिश्चित करें ताकि पात्र मतदाताओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

एसआईआर के द्वारा सुव्यवस्थित रिकार्ड तैयार करने की बात अच्छी है और इससे स्पष्ट हो जायेगा कि किस जगह पर कितने वोटर हैं। इस प्रकार की छानबीन कुछ अन्तराल के बाद होनी ही चाहिये लेकिन वर्तमान में जिस प्रकार से यह अभियान चल रहा है उसे लेकर भ्रम भी है। यह तक कह दिया जा रहा है कि वोटरों को हटाया जा रहा है, सरकार की मंशा के अनुसार कार्य हो रहे हैं इत्यादि। बहुत सीधी सी बात है कि इसमें किसी की मंशा की बात नहीं हो सकती है और वैधता की बात होगी। इतना जरूर है कि जो लोग अपने क्षेत्र के वोटर हैं, उन्हें अपने को ही साबित करने के लिये साक्ष्य देने पड़ रहे हैं। ऐसे में भ्रम और भ्रमित होना स्वाभाविक है। इस स्थिति में बहुत सावधानी बरतनी होगी। लोकतन्त्र में सब हाक लगाने लगते हैं लेकिन सच्चाई को जानना चाहिये। एसआईआर कार्य में लगी व्यवस्था को आम जन को सुनना और समझना चाहिये, न कि नोटिस थमा देना ही इसका समाधान है। बहुत तरीके से बताया जाये कि दस्तावेजों की सूची में से किसी भी एक को दिखा कर सामधान हो सकता है। एसआईआर अभियान के तहत फर्जी वोटरों की छंटनी होनी चाहिये लेकिन उन्हें तो सम्मान देना ही होगा जो जन्मजात वोटर हैं। इस अभियान में सभी ने सूझबूझ दिखानी चाहिये।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

सीएपीएफ कानून को दी चुनौती

नई दिल्ली। केन्द्रीय सशक्त पुलिस बल (सीएपीएफ) के करीब 3000 कैडर अधिकारियों ने हाल में लागू सीएपीएफ (सामान्य प्रशासन) अधिनियम 2026 की कुछ धाराओं को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। इन अफसरों में शौर्य चक्र विजेता और महिला अफसर भी हैं।

सिंधु जल संधि पर पाक का रवैया

वाशिंगटन। अमेरिका ने भारत के राजदूत विनय मोहन क्वात्रा ने कहा कि सिन्धु जल सन्धि सद्भावना और मित्रता की भावना में हस्ताक्षरित की गई थी और पाकिस्तान ने इसे नष्ट करने में आधी शताबी बिता दी है। न्यूजवीक में प्रकाशित एक लेख में क्वात्रा ने पाक के रवैये को उद्घाटित किया है।

गुलाम जम्मू-कश्मीर में नवाज को बहुमत

नई दिल्ली। गुलाम जम्मू-कश्मीर में हिंसा, विरोध प्रदर्शनों और चुनावी विवादों के बीच पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की पार्टी पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज ने सत्ता में वापसी का रास्ता साफ कर लिया। भारत ने पीओके में तथाकथित स्थानीय चुनाव को पूरी तरह दिखावा बताते हुए कहा है कि इससे उस इलाके की हकीकत को छिपाया नहीं जा सकता।

जेन-जी हमारी पीढ़ी से ज्यादा ईमानदार

नई दिल्ली। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने छात्रों के विरोध प्रदर्शन को लेकर का कि विरोध प्रदर्शन करने से जेन जी देश विरोधी नहीं हो जाते। युवाओं के नेतृत्व में दुनिया के सबसे बड़े सम्मेलनों में से एक में हिस्सा लेते हुए संघ प्रमुख ने कहा अगर जेन जी विरोध कर रहा है तो उनकी चिन्ताओं पर ध्यान दिया जाना चाहिये। जेन जी हमारी पीढ़ी से ज्यादा ईमानदार हैं।

कॉकरोच जनता पार्टी का अभियान

कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थपक अभिजीत दिपके ने पार्टी की आगामी रणनीति की घोषणा की। इस रणनीति में महाराष्ट्र और भारत भर में जनभावनाओं को समझने के लिये सितम्बर से शुरू होने वाला 'क्या बोलती जनता?' नामक राष्ट्रव्यापी अभियान शामिल है। दिल्ली जन्तर-मन्तर पर नीट के प्रश्नपत्र लीक होने के विरोध प्रदर्शनों के बाद राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित करने वाली दो दिवसीय राष्ट्रीय कोर कमेटी की बैठक के बाद प्रेस में यह कहा।

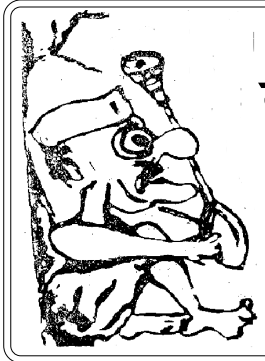

फसक

दाज्यू, अकड़म-बकड़म जो मुंह आया बक रहे ठैरे

रील के जमाने में कुकुरयोव कम नहीं हो रही है बल

दाज्यू, घोर कलजुग आ गया है। हमारा बब्बू सुबह-शाम 'मादर-फादर' पता नहीं क्या-क्या बोलने लगा है। बब्बू की ईजा खुश है और कह रही थी- 'जेन-जी है उनका लाल।' दाज्यू, हमें डर लगने लगा है कि फनफनाते जमाने में कब किसकी छाल घाम लग जाएगी। क्या बड़े क्या छोटे, अकड़म-बकड़म जो मुंह आया बक रहे ठैरे। फिल्मों वाली कंगना रनौत के फोटू चेप कर जोई-तोई कहा जा रहा है। दाज्यू, हम ठैरे मधुवाला-सुरैया के जमाने की श्याम-श्वेत फिलम देखने वाले। जमाना कब रंगीन हो गया हमें तो अब पता चल रहा है, जब दिल्ली की सड़कों पर लट्ठ चले। रील के जमाने में कुकुरयोव कम नहीं हो रही है बल।

अब कोई भजन भी करने लगे तो डर लग रहा है कि पता नहीं क्या अर्थ निकल जाएगा। हर नेता, अभिनेता, सड़क छाप, तिलकछाप, गमछाधारी, टोपीधारी, मफलरधारी, नंगधड़ंग मोबाइल के आगे खड़े होकर चकबक बोलने का आदी हो चुका है। जमाने में मसालों की खुशबू इतनी ज्यादा फैल चुकी है कि सबको स्वाद लग चुका। मोदी ज्यू ने आन्ध्र प्रदेश में विजयनगरम के भोगपुर में अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट का उद्घाटन करते समय कहा- 'पहले देश में एयरपोर्ट के नाम एक ही परिवार के नाम पर होते थे लेकिन हमने इस परम्परा को बदला।' दाज्यू, जन्तर-मन्तर में प्रदर्शन के दौरना बच्चों के गाली देने पर भी मोदी ज्यू दु:खी हैं। उन्हें देश के भविष्य की चिन्ता हो रही है। उधर हल्द्वानी में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकाजुर्नन खड़गे की सभा से पहले पुलिस दफ्तर में हंगामा हो गया। दाज्यू, पुलिस कप्तान को भाजपा का एजेंट बताते हुए नेता बरस पड़े। नुमाईश में आइस्क्रीम बेचने वाला शिबो शिव.....औरतें नाच-नाच कर रील बना रही थीं लेकिन हिन्दूवादी नेता ने इसे बन्द करा दिया।

दाज्यू, बदरीनाथ धाम में चढ़ावा चोरी के मामले में पुलिस रिमाण्ड पर रहे मुख्य आरोपी प्रमोद नौटियाल ने अपना जुर्म कबूल लिया है बल। पुलिस मान रही है वह इसमें शामिल अन्य लोगों को बचाने की कोशिश कर रहा है। दाज्यू, देश हो या प्रदेश कुछ तो गजबज है। महाराष्ट्र में नवनिर्माण सेना अध्यक्ष राज ठाकरे ने मुम्बई के प्रसिद्ध सिद्धि विनायक मन्दिर की दानपेटी से प्रतिवर्ष 18 करोड़ रुपये चोरी होने का आरोप लगाया है।

दाज्यू, कलजुग में गुण्डई और बदमाशी बड़ा रोजगार ठैरा। जब राह चलते लोगों को नहीं छोड़ रहे हैं तो मन्दिर में विराजमान भगवान को क्या पूछेंगे? हल्द्वानी के हिम्मतपुर मल्ला क्षेत्र में सुबह की सैर कर रही बुजुर्ग महिला के कुण्डल छीन कर दो कबाड़ी भाग गये थे, बाद में पुलिस ने इन्हें पकड़ा। इसी शहर में किशोरी के साथ दो युवकों ने गलत काम किया। उधर रामनगर के शमशान घाट रोड पर नाबालिक छात्रा का अपहरण कर दुष्कर्म कर दिया। कलजुग की ऐसी नंग्योई गजब है भई। हल्द्वानी महानगर की युवती का अश्लील फोटो बना और धमका कर ठगी भी हुई है। रामगढ़ के सतोली में मजदूरी की तलाश में बाहर से आए युवकों ने युवतियों से छेड़छाड़ शुरू कर दी थी, ग्रामीणों ने उन्हे पकड़ कर फतोड़ दिया। मार चप्पल ही चप्पल और बिच्छू घास सिकाई की। डड़ाडाड़ करते हुए युवकों ने माफी मांगी। भूल जाएंगे अब कुकुरयोव करना। दाज्यू, सितारगंज निवासी एक सीए को पुलिस ने पकड़ा है क्योंकि वह शादी का झांसा देकर अपनी रिश्तेदार युवती से सात साल तक शोषण करता रहा। इसी तरह बाजपुर नगर क्षेत्र में किशोरी से दुष्कर्म कर अश्लील वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करने का मामला दर्ज हुआ है। देहरादून के सहस्त्रधारा रोड निवासी एक महिला ने अपनी बेटी को बेच दिया बल। विवाद हुआ तो अपहरण की साजिश रच डाली। अब खरीद-फरोख्त करने वाले चार पुलिस की पकड़ में हैं। इसी तरह रामनगर के ग्राम मालधन क्षेत्र में युवती को झांसा देकर केरल ले जाने की साजिश थी, आरोपी दबोच लिया गया है।

दाज्यू, सल्ट के विधायक जीना ज्यू का पिक्चर सोशल मीडिया पर चल रहा है। कहा जा रहा है वह गाली-मुखाली कर रहे हैं। दाज्यू, हमने भी सोशल मीडिया पर देखा। हमें तो लग रहा है कि विधायक को समाज की बहुत चिन्ता है। उधर कपकोट के विधायक गड़िया ज्यू भी उलझते में दिखे। एक महिला अपनी दुखभरी सुनाई। दाज्यू, हम तो यही कामना कर रहे हैं चारों ओर सुख-शान्ति बनी रहे। न कहीं हरण हो, न किसी का चीरहरण हो, न बेगार का चिन्हीकरण हो। चुनाव टैम में बहुत गजबज की सम्भावना लग रही है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

रतन सिंह उर्फ.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

कहानी को उनके कुनबे अलावा सभी जानते हैं। इनके परिवार के 89 वर्षीय दीवान सिंह धर्मशक्तू से आज की बातचीज प्रस्तुत है। इसी क्रम में इनके परिवार के बारे में कुछ और जानकारी प्रस्तुत है। रतन सिंह जी के सुपुत्र भीम सिंह थे। इनके चार पुत्र हुए- दीवान सिंह, केदार सिंह, देवेन्द्र सिंह, राम सिंह। इनमें से राम सिंह जी का असमय निधन हो गया। दीवान सिंह की अगली पीढ़ी में संजय सिंह, नीमा (जंगपांगी), मंशा (रावत), शीलू (जंगपांगी)। केदार सिंह के परिवार में गुड्डी (लस्पाल), पूजा (टोलिया), रोजी धर्मशक्तू। देवेन्द्र सिंह के परिवार में धीरेन्द्र सिंह, लीला, वीरेन्द्र सिंह हैं।

दीवान सिंह धर्मशक्तू का जन्म 1938 में मिलम में हुआ। इनके पिता भीम सिंह तिब्बत व्यापार के परम्परागत कार्य में माहिर थे और व्यापार के दिनों तिब्बत में ही बीमारी के कारण उनका निधन हो गया था। इनकी माता श्रीमती हरकी देवी गृहणी के अलावा अपने कुटीर उद्योग में कुशाग्र थीं।

दीवान सिंह का बचपन भी माइग्रेशन की उस व्यवस्था में बीता जब पूरा कुनबा मौसम के अनुसार इधर से उधर जाता और बच्चों की पढ़ाई होती। बचपन की पाठशाला के बाद मुनस्यारी से शिक्षा करने के बाद अल्मोड़ा से आईटीआई में प्रवेश लिया और सर्वेयिंग में डिप्लोमा कर एक वर्ष यूपी पीडब्लुडी में रहे। इसके बाद 25 मार्च 1963 को बीआरओ इनकी नियुक्ति हो गई। सीमा सड़क संगठन(बीआरओ) की नौकरी में दीवान सिंह जी को अरुणांचल, भूटान, लाहौल-स्पीति आदि जगह सर्वेक्षण की जिम्मेदारी निभाई। भूटान में रहते उन्हें रानी के निवास स्थान तक पक्की रोड का कार्य सर्वे का मौका भी मिला। वहाँ की रानी जिस जगह रहती उसे 'गुम्फा' कहते हैं, वहाँ खूब सजाया हुआ था। रोड कार्य पूर्ण होने के बाद एक दिन रानी ने बुलाया और नमकीन चाय पिलाई। दीवान सिंह जी कहते हैं- 'चूंकि हम लोग नमकीन चाय पीने के आदी हैं तो वहाँ भी मक्खन डाली हुई नमकीन चाय की स्वाद खूब था।' बचपन खेल से लेकर बीआरओ में रहते सेवा को रोमांच मानकर जीने वाले दीवान सिंह जी सामाजिक कार्यों में भी हमेशा अग्रणीय रहे हैं। शिव मन्दिर जोहार नगर हल्द्वानी के पास इनका आवास है और परिवार में श्रीमती गंगोत्री देवी सहित परिजन हैं। अपनी नौकरी के दौरान पड़ाव में इन्होंने अपना आशियाना बना लिया था। वह बताते हैं कि सामाजिक कार्यों में सक्रियता के लिये 'जोहार मिलन केन्द्र' बनाया गया, इसकी शुरुआत के लिये सबसे पहले स्व.कल्याण सिंह पांगती ने एक लाख रुपये देकर समाज को उत्साहित किया। आज यह बहुउद्देशीय स्थान सबके लिये सुगम है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

विचार

हिमालय तो पिघल ही रहा है परन्तु उत्तराखण्ड के गाँव भी पिघल रहे हैं

चातक कार्की

क्या हम उत्तराखण्ड के गाँवों से लोगो का मैदानी क्षेत्र में जाकर घर बना कर रहने लग जाना, इसके गाँवों का पिघलना नहीं कह सकते? लाख कोशिशों के फलस्वरूप क्या पहाड़ के गाँव खाली हो चुके हैं? गाँव में जाकर सभी कह रहे हैं कि हमारे गाँव में अधिकांश घरों में ताला लगा है। बाखरी के बाखरी बीरान पड़ रहे हैं।

लगभग साठ वर्ष पूर्व जिन गाँवों में साँझ होने के साथ-साथ बच्चों की खेलने चिल्लाने की वह किलकारियाँ अब सुनने को नहीं, और तो और पड़ोसी पक्षी सिटोलिया साँझ को पेड़ों में आश्रय हेतु झुण्ड के झुण्ड में चहचहाते वह भी कम हो चुका है। तब हमें सुमित्रानन्दन पन्त जी की यह कविता याद आती है-

संध्या का झुरपुट
बाँसों का झुरमुट
चहक रही चीड़ियाँ
टीं बी टीं वी टुक टुक।

लो भाई प्रातः हुआ, खेतों में जाने की क्या चहल-पहल होती थी। कोई बैल ले जा रहा तो काकेई हल तथा जुआ कन्धे में लिए जा रहा है। गाँव की बहुएं घास काटने निकलती। तमाम खेतों ही समय कब गया पता नहीं चलता था। यह पलायन उत्तराखण्ड बनने से पूर्व उतना नहीं था जितना अब हो रहा है।

अब हम सब उत्तराखण्ड के लोगों को केवल पलायन के कारण मालूम करने से कुछ होने वाला नहीं है अपितु पलायन रोकने के लिए उत्तराखण्ड के लोगों को जो पलायन कर चुके हैं जो अभी गाँव में हैं, सबको सोचना होगा कि स्वयं हममें चेतना कब आएगी? हमको चाहिए कि सभी तबके के लोगों से सुझाव मांग कर 'पिघलता हिमालय' सम्पादन मण्डल को सुझाव अविलम्ब भेजना है कि किस तरह पहाड़ की बेरोजगारी, गरीबी, साधन विहीन गाँवों की समस्याएं हल हो सकती हैं। मैं प्रथमतः निम्न प्रकार संक्षिप्त में भूज रहा हूँ जिनको बदलती सरकारों को एक दिन मानना ही होगा-

1. सीनियर सिटीजन, छोटे-छोटे बच्चों का त्वरित इलाज के लिए अस्पतालों में तुरन्त डाक्टरों की नियुक्ति। इसी प्रकार गर्भवती महिलाओं के लिये भी अस्पताल व्यवस्था हो।

2. अच्छी शिक्षा हेतु गाँव के हर स्कूलों में पर्याप्त अध्यापक की नियुक्ति। जबकि हर वर्ष उत्तराखण्ड में बड़ी संख्या में अध्यापक सेवा समाप्ति कर रहे हैं। सरकार को चाहिये कि खण्ड शिक्षा अधिकारी के नेतृत्व में तुरन्त वैकल्पिक व्यवस्था हो।

3. गाँवों में जंगली जानवरों मुख्यतः बन्दर, सुअर, बाघ,भालू, शाही आदि से किसान की फसल नष्ट होती है तथा उनसे मानव मात्र की जान-माल को खतरा हो चुका है, उसके लिए हर ग्राम सभा में दो रात्रि खेत रक्षक तथा दो दिन के लिए फसल रक्षा हेतु प्रहरी का कार्य करेंगे, सरकारी नियुक्ति दी जाए। यदि ग्राम सभा में चार युवक युवतियों को नौकरी मिलेगी तो गाँव की बेरोजगारी हजारों की संख्या में दूर हो सकती है। गाँव के लोग ही ऐसे गरीब, असहाय और परिश्रमी लोगों को छाँट सकते हैं। ध्यान रहे कि उन चारों में से एक अवकाश प्राप्त फौजी भाई को नियुक्ति दी जाए जो बन्दूक चलाना तथा शिकार करना जानता हो।

सरकार को एक न एक दिन गाँव में एक प्रहरी को बन्दूक की व्यवस्था सरकार की ओर से अविलम्ब करे। वर्षों लाइसेंस बनाने में समय बर्बाद न हो। जंगली जानवरों को मारने की प्रक्रिया सरकार का दिखावा है। प्रत्येक वर्ष भालू महिलाओं व मर्दों पर आक्रमण कर रहा है। गाँव का जंगल से रिश्ता टैक्टर ने समाप्त कर दिया है तो गाँव साँझ पड़ते ही गुलदार बच्चों को उठा ले जा रहा है। सरकार तन्त्र बहुत चालाक होता है। पहाड़ के लोगों को जितना हो ठगा जाए और बारी बारी से पार्टियां राज करती रहें।

अध्यापकों की नियुक्ति हेतु कई वर्ष उलझाए रखने हेतु लोक सेवा आयोग को यह कार्य सौंप देती है। जबकि शिक्षा विभाग में तो एलटी से प्रवक्ता, प्राध्यापक होने के लिये पदोन्नति का सरकारी आदेश है। सरकार खामखाँ इस प्रकार उलझा देती है कि हजारों अध्यापक बिना कोई पदोन्नति पाए अवकाश ग्रहण कर चुके हैं।

उत्तराखण्ड के लोग, जो जहाँ हो आवाज उठाओ फिर वह गढ़वाल की ओर से तथा कुमाऊँ की ओर से एक साथ उठे। सरकार में आज वही दल है जिसके पास चुनाव लड़ने के लिये पैसा है। यूकेडी तो क्षेत्रीय दल था न पैसा न जन समर्थन। रह गये भाई रह गये हम गरीबी का घूँट पीते पीते। गढ़वाल में मैं भाई सतपाल जी को बधाई देता हूँ जिन्होंने श्रीनगर तक रेल लाइन की नींव रखी, पर कुमाऊँ में तो प्रथम महायुद्ध के समय से टनकपुर बागेश्वर रेल लाइन का कार्य ही शुरु नहीं हुआ। ये सरकारें आँखिर कब तक ठगेंगी। प्रत्येक सड़क योजना चुनाव के वर्ष ही दिखाने हेतु प्रारम्भ की जाती हैं। चुनाव जीते फिर जस के तस।

बेराजगार युवाओं से कई बार टीईटी परीक्षा कराई जिससे वे ओवरएज हो गये। मैं तो केवल एक विभाग की बेरोजगारी दूर करने हेतु सुझाव व निदान लिख पाया हूँ। ऐसे ही हाल प्रायः पीडब्लुडी, स्वास्थ्य विभाग, वन विभाग, विद्युत विभाग आदि का है। वहाँ जो भी पद खाली हुआ वर्षों से वैसा ही रहता है।

भ्रष्टाचार तो पूछो नहीं, बिना पैसे दिए आज कोई भी विभाग जल्दी कार्य कर ही नहीं रहा है। न कोई पकड़ने वाला है न कोई दण्डित करने वाला। ऐसे उपरोक्त सभी कारण हैं आज पहाड़ के अच्छे गाँवों से भी पलायन हो रहा है।

(ग्राम पो. चौकोड़ी, बेरीनाग)

हल्द्वानी का मुखानी चौराहा आफत बन चुका है

हाईकोर्ट ने भी मामला उठाते हुए प्रगति रिपोर्ट मांग डाली

हल्द्वानी। महानगर का सबसे व्यस्त चौराहे के रूप में मुखानी चौराह चर्चा में है और इसमें होने वाले जाम को लेकर सभी परेशान हैं। एक बार तो लग रहा था सड़क चौड़ीरकण के साथ ही इस चौराहे का उद्धार होने जा रहा है लेकिन जोर शोर से चले अतिक्रमण हटाओ अभियान के बाद भी सबकुछ धरा रह गया। अब हाईकोर्ट ने मामला उठाते हुए प्रशासन से इसकी प्रगति रिपोर्ट मांग ली है।

जाम की समस्या और फ्लाईओवर निर्माण के मामले में दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने कहा जब हल्द्वानी के अन्य चौराहों से कब्जा हटाकर चौड़ीकरण किया गया तो मुखानी चौराहे पर चिह्नित अतिक्रमण क्यों नहीं हटाया गया। कोर्ट ने राज्य सरकार और डीएम नैनीताल को दो सप्ताह के भीतर प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति मनोज कुमार गुप्ता और न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खण्डपीठ ने इस मामले की सुनवाई की। याचिकाकर्ता सेनि. अधिशासी अभियन्ता पूरन चन्द्र जोशी ने अपनी याचिका में कहा कि हल्द्वानी के मुखानी चौराहे पर आए दिन लगने वाले जाम को देखते हुए 2018 में फ्लाईओवर बनाने का सुझाव दिया गया था। इसके बाद प्रशासन ने लाखों रुपये खर्च कर सर्वे भी कराया लेकिन वर्षों बीत जाने के बाद भी सर्वे रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं की गई है। यह चौराहा एसटीएच सहित अन्य अस्पतालों को जाने वाला मुख्य मार्ग है और यहाँ घण्टों जाम लगा रहता है। इससे यात्रियों, छात्रों, मरीजों और कर्मचारियों को परेशानी होती है।

बताते चलें कि शहर का कालाढूंगी मार्ग अतिक्रमण और जलभराव मामले में अभी भी नहीं सुधर पाया है। बार-बार अभियान चला लेकिन इसमें जाम की स्थिति कम नहीं है। इसमें फुटपाथ से कब्जे हटाना, नालों को खुलवाना जरूरी है। इस मार्ग पर फ्लाईओवर अति आवश्यक है ताकि भविष्य के हालातों को देखते हुए लोगों को राहत मिलेगी।

ज्योतिष की बातें 294

17 अगस्त 2026 को सूर्य अपनी स्वराशि सिंह में प्रवेश करेगा लेकिन केतु से पीड़ित होने के कारण अपना शुभफल देने में समर्थ नहीं होगा फिर भी अगले एक माह स्वास्थ्य आदि अपने कारक विषयों में मिथुन, मीन, वृश्चिक व तुला राशि के जातकों को अल्पमात्रा में शुभफल प्रदान करेगा।

18 अगस्त 2026 को बुध कर्क राशि में पूर्व दिशा में अस्त हो जाएगा अतः अगले 25 दिन बुध के द्वारा प्राप्त शुभाशुभ फलों में न्यूनता प्रतीत होगी।

22 अगस्त 2026 को बुध शत्रुराशि कर्क से निकलकर मित्रराशि सिंह में प्रवेश करेगा। वहाँ पर कोई शुभाशुभ दृष्टि नहीं होगी बल्कि सूर्य से युति होने के कारण बुधादित्य योग बनेगा अतः बुध अत्यन्त बलवान रहेगा। इसलिए बुध वाणिज्य, व्यवसाय आदि अपने कारक विषयों में अगले 15 दिन कर्क, वृषभ, मीन, मकर, वृश्चिक व तुला राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

23 अगस्त 2026 को सूर्य सायनमान से कन्या राशि में प्रवेश करेगा। शरद् ऋतु का प्रारम्भ हो जाएगा। अतः आगामी दो महीने त्रिफला चूर्ण में छठा भाग चीनी मिलाकर सेवन करना स्वास्थ्यप्रद रहेगा।

नागपंचमी- श्रावण शुक्लपक्ष की षष्ठीयुता पंचमी तिथि को नागपंचमी का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार सोमवार 17 अगस्त 2026 को नागपंचमी का पर्व मनाया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार 177

तीर्थयात्रा का आधुनिक स्वरूप

आजकल किसी को तीर्थयात्र करनी है तो बहुत सारा पैसा नकद और कई एटीएम कार्ड लेकर चलना होता है। रास्ते में भोजन पर खर्च, रात में होटल पर रुकने का खर्च होता है। रास्ते में कहीं पर चाय भी पीनी हो तो उसको आम आदमी से अधिक पैसा देना पड़ता है। पूरे रास्ते में स्थानीय व्यापारी उस तीर्थयात्री से अधिक से अधिक पैसा वसूल करने की कोशिश करता है। और यदि कहीं एटीएम कार्ड खो जाए या उसका पर्स चोरी हो जाए या फिर मोबाइल कहीं गिर जाए तो तीर्थयात्रा तो छोड़ ही दो, घर वापस आना मुश्किल हो जाएगा। जबकि पहले जमाने में आदमी खाली हाथ और खाली जेब घर से चल देता था। रात बिताने के लिए निःशुल्क धर्मशालाएं होती थीं और भोजन के लिए जगह-जगह लंगर चलते रहते थे। बिना कोई पैसा खर्च किए केवल पैदल चलकर ही यात्र पूर्णकर घर वापस आ जाते थे। क्या अब ऐसा हो सकता है? वास्तव में आज भी हो सकता है।

महाराष्ट्र में लगभग ढाई सौ किलोमीटर लम्बी इक्कीस दिन की आषाढ़ मास में पण्ढरपुर यात्रा होती है जिसमें हजारों लोग पैदल यात्रा करते हैं। इस वर्ष मैंने देखा कि रास्ते में जगह-जगह निःशुल्क भोजन की व्यवस्था थी, नाश्ते की व्यवस्था थी और रात्रि विश्राम के लिए भी धर्मशालाएं और स्कूल आदि खोल दिए गए थे। यहाँ तक कि डॉक्टरों ने भी रास्ते में यात्रियों की सेवा के लिए कैम्प लगाए थे। नाई मोची आदि लोगों ने भी रास्ते में जगह-जगह अपनी निःशुल्क सेवाएं दी थीं। इस उदाहरण से मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि आज भी पहले की तरह तीर्थयात्राएं आदि सुलभ और चिन्तामुक्त हो सकती हैं, बस लोगों में सामाजिक और धार्मिक भाव होना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

सुरेश मेडिकल स्टोर
नियर- टैक्सी स्टैंड
मदकोट रोड
मुनस्यारी
मो.- 8077929044, 9756822576

HIMALAYAN
MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav,
Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भगवान जगन्नाथ को 56 भोग प्रसाद चढ़ाया

द्वाराहाट। तीन दिवसीय जगन्नाथ रथ यात्रा आयोजन में भक्तों ने भगवान जगन्नाथ को 56 भोग प्रसाद चढ़ाया। आयोजन समिति के दीवान रावत, प्रभु देव हरि, हेम रावत, नगर पंचायत अध्यक्ष संगीता आर्या, पूर्व विधायक पुष्पेश त्रिपाठी, पलायन निवारण आयोग सदस्य अनिल शाही, जिला पंचायत सदस्य युगलकिशोर सहित तमाम लोग इस मौके पर थे।

खारबगड़ भूस्खलन की चपेट में

बागेश्वर। कपकोट तहसील का खारबगड़ गांव जबर्दस्त भूस्खलन की चपेट में है। पहाड़ी से आए मलबे से कई घरों में नुकसान हुआ है। मलबा और पत्थर गिरने से ग्रामीण असुरक्षित हैं। खारबगड़ का क्षेत्र लम्बे समय से भू कटाव और भू स्खलन की चपेट में है। ग्रामीण सुरक्षित स्थान पर विस्थापन की मांग कर रहे हैं।

मासी-चौखुटिया सड़क बदहाल

चौखुटिया। मासी-चौखुटिया मोटर मार्ग बदहाली से यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जगह-जगह गड्ढों, बरसात में जलभराव और कीचड़ के कारण वाहन चालकों, स्कूली बच्चे परेशान हो रहे हें। यूकेडी ने इसके लिये प्रदर्शन करते हुए डीएम को ज्ञापन भेजा है। कहा है कि इस नौ किमी लम्बे मार्ग में डामरीकरण, मरम्मत, झाड़ियां कटान करवाया जाए।

ताड़ीखेत गोलज्यू मंदिर संवरेगा

अल्मोड़ा। ताड़ीखेत विकासखण्ड के मुसमोली गाँव स्थित गोलज्यू मन्दिर को संवारने की कवायद है। कुमाऊँ मण्डल विकास निगम 25 लाख रुपये से इसके सौन्दर्यीकरण की तैयारी में है। इसके लिये शासन को प्रस्ताव भेजा गया है ताकि इसमें सुविधाओं का विस्तार किया जा सके।

सुरईखेत आन्दोलन की चेतावनी

द्वाराहाट। विकासखण्ड द्वाराहाट के सुरईखेत क्षेत्र की बीस ग्राम पंचायतों के जन प्रतिनिधियों और ग्रामीणों की शहीद स्मारक सुरईखेत में हुई बैठक में आन्दोलन की चेतावनी दी गई। माँ विजया संघर्ष समिति का पुनर्गठन कर सीएम को 12 सूत्रीय मांगपत्र भेजते हुए बैंक शाखा खेलने, पशु चिकित्सालय, प्रा.स्वास्थ्य केन्द्र में स्थायी चिकित्सों की मांग की गई।

धरमघर-चुचेर सड़क बदहाल

कपकोट। धरमघर-चुचेर-मांजखेत 20 किमी मोटर मार्ग लम्बे समय से बदहाल बना हुआ है। इस क्षतिग्रस्त सड़क के सुधार हेतु ग्रामीण कई बार कह चुके हैं। लोनिवि के ईई का कहना है कि शीघ्र ही यह कार्य कर लिया जायेगा।

परिक्रमा

फचैऽक

सन सताइस उत्तराखण्ड में, छठूं विधानसभा चुनाव छन
नेता फिरि यां ब्यूंज है गई, देखी नई हुल्यर उकाव पन
देखी नई हुल्यर उकाव पन, पांच साल में ऐ गौकि याद
दशौर ज्यस बांटण लाग रई, वलिपलि बाखइ धादा धाद
जीती बेर तौं कभै न देखीन, भीं पन कां आपण घमण्ड में
बैसि लागलि डड.री देख्यैल, सन सताइस उत्तराखण्ड में।

गणेश पाण्डेय

चेतावनी- खतलिंग ग्लेशयर के सामने झील भविष्य की आपदा का कारण

टिहरी। जिले की भिलंगना घाटी स्थित खतलिंग ग्लेशयर के सामने तेजी से बढ़ रही हिमनदीय झील भविष्य में बड़ी आपदा का कारण बन सकती है। देहरादून स्थित इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेंसिंग सहित अन्य संस्थानों के विज्ञानियों ने सैटेलाइट आंकड़ों और कम्प्यूटर आधारित बाढ़ माडलिंग के आधार पर चेतावनी दी है कि यदि यह झील टूटती है तो अधिकतम 4377 घनमीटर प्रति सेकंड (क्यूमेक) पानी नीचे की घाटी में तबाही मचा सकता है। इसलिये मानसून के दौरान ग्लेशियर झीलों की सक्रिय निगरानी आवश्यक है।

शोध के अनुसार वर्ष 1999 से 2020 के बीच खतलिंग ग्लेशियर के सामने बनी झील का क्षेत्रफल 0.15 वर्ग किमी से बढ़कर 0.35 वर्ग किमी हो गया यानी दो दशक में यह दोगुना से अधिक फैल गई। इस अवधि में ग्लेशियर का क्षेत्रफल 0.21 वर्ग किमी घट गया। विज्ञानियों के अनुसार बढ़ते तापमान से ग्लेशियर तेजी से पिघल रहा है औ उसी पानी से झील लगातार बढ़ी होती जा रही है।

यूपी से डीएलएड कर नौकरी पाने वाले 152 शिक्षकों पर लटकी तलवार

हल्द्वानी/देहरादून। यूपी से डीएलएड कर उत्तराखण्ड में प्राथमिक सहायक अध्यापक की नौकरी पाने वाले 11 जिलों के 152 शिक्षकों पर कार्रवाई की तलवार लटकी है। प्रारम्भिक शिक्षा विभाग ने इन शिक्षकों को नोटिस जारी कर उनके अभिलेखों की जाँच शुरू कर दी है। हरिद्वार और उधमसिंह नगर को छोड़कर अन्य जिलों के शिक्षकों को सूचीबद्ध किया गया है, जिनमें सर्वाधिक पिथौरागढ़ में 43 शिक्षक हैं। वर्ष 2024 में विभाग ने प्राथमिक विद्यालयों में 2906 सहायक अध्यापक पदों पर भर्ती प्रक्रिया शुरू की थी। भर्ती को उत्तराखण्ड का स्थायी निवासी और डीएलएड उत्तीर्ण होना अनिवार्य था। इसमें करीब 2400 अभ्यर्थियों को नियुक्ति दी गई लेकिन बाद में शिकायतें मिलीं कि कुछ अभ्यर्थियों ने यूपी में डीएलएड करने को वहां का फर्जी स्थायी निवास प्रमाण पत्र बनाय और नौकरी के लिये उत्तराखण्ड का स्थायी निवासी प्रमाण बनाया और नौकरी के लिये उत्तराखण्ड का स्थायी निवासी प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया।

अल्मोड़ा की ऐतिहासिक पाटाल बाजार को मिलेगी नई पहचान

अल्मोड़ा। विधानसभा चुनाव से पहले नगर निगम को प्रदेश सरकार ने करोड़ों की सौगात दी है। सांस्कृतिक राजधानी अल्मोड़ा की ऐतिहासिक पाटाल बाजार को उसके पुराने स्वरूप में लौटाने के लिये 34 करोड़ की डीपीआर तैयार कर सरकार को भेजी थी। सीएम ने पहले चरण के काम के लिये 4 करोड़ 66 लाख जारी कर दिए हैं। अल्मोड़ा के बाजार में परम्परागत पटाल (पाथरों) को हटाकर 2004 में कोटो स्टोन लगाए गए थे, जिसमें बार-बार फिसलन की शिकायत के अलावा दुर्घटना की शिकायतें मिल रही थीं। अब सरकार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये बाजार को फिर से उसके ऐतिहासिक स्वरूप लाने जा रही है। मेर नगर निगम अजय वर्मा ने मुख्यमंत्री की इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि बाजार में बिजली के तार, टेलीफोन लाइनों के साथ पाइप लाइन को भूमिगत किया जाएगा। इसका पूरा रणनीति तैयार है।

जौनसार का लक्की उत्तरीध्रुव यात्रा पर

विकासनगर। मूल रूप से चकराता तहसील के रजाणू गाँव निवासी लक्की रावत (16) दस दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक अभियान 'आइस ब्रेकर ऑफ नॉलेज' में भारत के एकमात्र छात्र प्रतिनिधि के रूप में भाग ले रहे हैं। सेपियंस स्कूल विकासनगर में कक्षा दस के छात्र लक्की इन दिनों रूस से न्यक्लियर आइसब्रेकर पोत '50 लेट पोबेडी' पर 22 देशों के विद्यार्थियों के साथ उत्तरी ध्रुव की ऐतिहासिक यात्रा पर हैं।

रूस के मुरमान्स्क स्थित एफएसयूई एटमफ्लोट बेस से शुरू हुए इस अभियान में भारत, रूस, चीन और बांग्लादेश सहित 22 देशों के 14 से 16 वर्ष आयु के मेधावि छात्र शामिल हैं। तीन कठिन चरणों की चयन प्रक्रिया के बाद प्रत्येक देश से केवल एक छात्र का इसमें चयन हुआ है। अभियान के दौरान लक्की 90 डिग्री उत्तरी अक्षांश तक की समुद्री यात्रा करते हुए आर्कटिक, जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियरों और समुद्री विज्ञान से जुड़े विषयों का अध्ययन कर रहे हैं। मेधावी लक्की रावत का चयन इसी वर्ष इसरो के प्रतिष्ठित 'सुविका' कार्यक्रम के लिये भी हुआ था।

एक अक्टूबर को काला दिवस मनाएंगे

देहरादून। राष्ट्रीय पुरानी पेंशन बहाली संयुक्त मोर्चा उत्तराखण्ड की प्रदेश स्तरीय बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष बी.पी.सिंह रावत की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में पुरानी पेंशन बहाली आन्दोलन को और अधिक प्रभावी व निर्णायक बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। संगठन की आगामी रणनीति के अनुसार पूरे प्रदेश में मण्डलीय एवं जिला स्तर की बैठकों के अलावा अगस्त में इस समय रैलियों का दौर चल रहा है। इसके उपरान्त सितम्बर के प्रथम सप्ताह में कुमाऊं मण्डल में कर्मचारी रैली का आयोजन होगा। यह भी निर्णय लिया गया कि 2005 में राज्य सरकार की ओर से ओपीएस समाप्त कर एनपीएस लागू करने के विरोध में एक अक्टूबर को प्रदेश में काला दिवस मनाया जाएगा।

चुनाव के लिए सात दलों के आवेदन

देहरादून। आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों के बीच चुनाव आयोग ने 17 पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों को चुनाव दौड़ से बाहर कर दिया है। वहीं सात नए दलों ने पंजीकरण के लिये आवेदन किया है, जिसमें खानपुर से निर्दलीय विधायक उमेश कुमार की जन निर्माण पार्टी भी है।

जड़ी-बूटी दिवस के रूप में जन्मदिन

हरिद्वार। पतंजलि योगपीठ के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण का जन्मदिन जड़ीबूटी दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर योगपीठ में हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया। योगगुरु स्वामी रामदेव समेत हजारों लोग उपस्थित थे।

महाभारत सर्किट का विस्तार

देहरादून। पर्यटन, धर्मस्व व संस्कृति मंत्री सतपाल महाराज ने राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा से शिष्टाचार भेंट कर दोनों राज्यों के बीच पर्यटन की सम्भावनाओं और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ाने पर चर्चा की। कहा कि दोनों प्रदेश मिलकर महाभारत सर्किट का विस्तार करेंगे। महाभारत काल के दौरान पाण्डवों ने उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण किया, राजस्थान में भी कई स्थानों पर आए।

सरकारी भूमि को कब्जे से बचाओ

नैनीताल। हाईकोर्ट ने राज्य व राष्ट्रीय राजमार्ग, वन भूमि व राजस्व भूमि पर हुए अवैध अतिक्रमण हटाने को लेकर दायर जनहित याचिका पर मुख्य सचिव से दो सप्ताह के भीतर जवाब मांगा है। कोर्ट ने सरकार से पूछा है कि सुप्रीम कोर्ट की ओर से अतिक्रमण को लेकर जारी दिशा-निर्देशों का कितना अनुपालन हुआ? कहा भविष्य में अतिक्रमण न हो, इसलिए सरकारी भूमि को बचाओ।

एकता मंच ने किया एस्मा का विरोध

देहरादून। सरकार की ओर से राज्याधीन सेवाओं में 6 माह के लिये एस्मा लागू करने का विरोध हो रहा है। उत्तराखण्ड कार्मिक मंच के अध्यक्ष रमेश पाण्डे ने जन्तर-मन्तर पर सांकेतिक विरोध प्रदर्शन कर सीएम को पत्र भेजते हुए एस्मा लागू करना कर्मचारियों के मौलिक अधिकारों का हनन बताया है।

आराकोट अस्पताल बेहाल हुआ

उत्तरकाशी। मोरी विकासखण्ड के सीमान्त क्षेत्र आराकोट-बंगाण में स्वास्थ्य सेवाओं की बदलहाल स्थिति को लेकर क्षेत्रवासियों का गुस्सा बढ़ता जा रहा हे। आराकोट और टीकोची के सरकारी अस्पताल लम्बे समय से डाक्टरों और आवश्यक स्वास्थ्य कर्मियों की कमी से जूझ रहे हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

अपने समाज
अपने प्रदेश
अपने देश
का नाम विश्व में
रोशन करने का संकल्प

दीपिका टोलिया की शानदार सफलता समाज को समर्पित

लद्दाख की कांग-यात्से-II चोटी पर सफल आरोहण कर अपनी संस्कृति का गौरवगान किया

डीडीहाट। क्षेत्र की बेटी दीपिका टोलिया ने लद्दाख की प्रसिद्ध कांग यात्से-।। चोटी (6,250 मीटर / 20,505 फीट) को सफलतापूर्वक आरोहित करते हुए अपनी इस सफलता को समाज को समर्पित किया। जिस समाज से दीपिका आती हैं उस संस्कृति के झण्डे को लेकर सफलता का परचम लहराते समय उनके खुशी के आँसू नहीं थम रहे थे। वह अपने बुजुर्गों, अपनी धरोहरों का स्मरण करती हैं और कहती हैं- अपने समाज, अपने प्रदेश, अपने देश का नाम रोशन करने का उनका संकल्प जारी रहेगा।

दीपिका जिस अभियान में निकलीं थी वह मार्खा वैली से होकर गुजरने वाला अपनी कठिन चढ़ाई, ऊँचाई, बर्फीले ग्लेशियरों और चुनौतीपूर्ण मौसम के लिए जाना जाता है। सफल आरोहण के बाद वह कहती हैं- इस शिखर पर पहुँचकर शौका जनजाति का परचम लहराना मेरे जीवन के सबसे गौरवपूर्ण और अविस्मरणीय क्षणों में से एक है। यह उपलब्धि केवल मेरी नहीं, बल्कि आप सभी की है। इस अभियान के लिए जिन्होंने भी मुझे आर्थिक, नैतिक या भावनात्मक सहयोग दिया, मेरा उत्साह बढ़ाया, मुझ पर बिश्वास किया और अपनी शुभकामनाओं से मेरा हौसला बनाए रखा, मैं उन सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ। आप सभी के सहयोग और आशीर्वाद के बिना यह सपना शायद कभी पूरा नहीं हो पाता। यह सफलता मैं आप सभी को समर्पित करती हूँ।

इस अभियान के दौरान दीपिका को हर कदम एक नई परीक्षा से गुजरना था। ऊँचाई पर आक्सीजन की कमी, बर्फीली हवाएँ, कठिन चढ़ाई और अत्यधिक ठण्ड के बीच कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उनके हाथ की एक उंगली और पैर के अंगूठे में चोट लगी, साथ ही तेज धूप और बर्फ की परावर्तित किरणों के कारण चेहरे और हाथों पर गम्भीर सनबर्न भी हुआ लेकिन इन सभी कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और पूरे आत्मविश्वास व दृढ़ संकल्प के साथ कांग यात्से-।। का फ्रल शिखरारोहण पूरा किया।

वह कहती हैं- 'मेरा प्रयास हमेशा रहेगा कि मैं आगे भी अपने क्षेत्र डीडीहाट, शौका जनजाति, उत्तराखण्ड और भारत का नाम देश-विदेश में गर्व से रोशन करती रहूँ। आप सभी का स्नेह, विश्वास और सहयोग आगे भी इसी तरह मिलता रहे, यही मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा है। जल्द ही मैं अपने अगले पर्वतारोहण अभियान की जानकारी भी आप सभी के साथ साझा करूँगी। एक बार फिर आप सभी का हृदय से धन्यवाद। यह सफलता केवल मेरी नहीं, बल्कि डीडीहाट, शौका समाज और आप सभी की साझा जीत है।'

मार्मिक लघु नाटक

जंगली फल : बेडू, पांगर की याद मा

जगदीश सिंह बृजवाल

एक बार पहाड़ के गाँव तथा नजदीकी जगंल में जंगली फलों द्वारा एक आमसभा का आयोजन किया गया जिसमें- काफल, किरमोड़ी, घिंघारू, हिसालू, मेहल (मेल) बमभौल् (पहाड़ी जामून), गीयैं, तिमल आदि सभी जंगली फलों ने अपनी-अपनी उपस्थिति दर्ज की। सभा प्रतिनिधित्व काफल कर रहा था। जो आज भी लोगों के चेहता बना ही है। लोग काफल.... काफल पुकारते रहते हैं। सभा में सभी 'आरू बेरू घिंघारू' (विभिन्न प्रकार के जंगली फल) जगंली फल सम्मिलित थे। नहीं था तो केवल खाने वाला बेडू व खाने वाला पांगर, जो अब विलुप्त हो चुके थे।

(स्थान- गाँव के करीब समतल पत्थर। समय- दोपहर आसन लगाए सबसे आगे बिराजमान- काफल, किरमोडा, घिंघारू बैठक प्रारम्भ।)

काफल- साथियों! सभी को मेरा सादर नमस्कार, आज जो हमारा बैठक बुलाने का उद्देश्य, मानव का हमारे प्रति जो बदला व्यवहार है हम सभी उससे बिचलित हैं। यद्यपि लोग मुझे थोड़ी बहुत प्रेम आज भी रखते हैं किन्त हमारे अन्य साथी -किरमोड़ा, हिसालू, मेल, घिंघारू, तिमूल, गीयें आदि फलों के प्रति इतनी बेरूखी से मन दुखी है आपने देखा होगा, अतीत में हम इनके अजीज मित्र हुआ करते थे। आखिर अब ऐसा क्यों?

किरमोड़ा- 'हां काफल दा, आप सही कह रहे हैं जब बच्चे, युवा प्रौढ़ बुजर्ग सब हमारे दीवाने होते थे। हमें हाथों-हाथ लेते थे।

घिंघारू- 'अरे दा, अब मैं बताता हूं, क्यों मानव का हमारे प्रति प्रेमभाव कम होता गया है। मानव परिवर्तन विकास के दौर से गुजर रहा है अब उनके पास खाने-पीने, अन्य संसाधनों का अभाव नहीं है। बच्चे पिज्जा बर्गर, मों-मों, च्योमीन, चिप्स, कुरकुरे खाने वाले हैं हर परिवार चिकन-मटन का स्वाद आये दिन ले रहा है अब जंगली क्या पसन्द करेंगे? कभी नहीं भाई.. कभी नहीं।

काफल- अच्छा ! ए बात है, अरे भाई, बात तो आपकी सही लगती है किन्तु हम भी तो इन मानवों का कष्ट के समय जीवन रक्षक बनकर साथ रहे थे।

घिंघारू- सही बात दाऽऽ, वह समय भी देखा जब मैं पककर लाल-लाल हो जाता तो- बच्चे क्या बडे भी मेरे पास दौड़े चले आते थे कुछ बच्चे माला पिरोकर गले में लटकाते अति प्रसन्न भी होते, आज इतनी उपेक्षा लोगों के खेत के किनारे घेराबन्दी लगाने तक रह गया हूं।

काफल- ठीक कह रहे हो भूला, घिंघारू, आज सभी मित्रजनों कि दुर्दशा देखी नहीं जाती है। अब तो 'खाने वाला बेडू व खाने वाला पांगर' मित्र भी हमारे बीच नहीं रहे, कहीं हमारे साथ भी न हो इसी लिए कुछ सोच बिचार के साथ मानव को सन् 1960-70 के यादों को स्मरण कराना आवश्यक है। हमें भी समझें!

किरमोड़ा- अरे भाइयों ! आज खाने वाला बेडू व पांगर की यादें सबको बहुत आती होगी वे भी हमारे भाई-बिरादर ही थे। बेडू, सामान्य बेडुओं से बड़ा दाना, गहरे नीले रंग, बच्चे स्कूल से घर पहुंचकर बस्ता फेंककर आ धमकते थे। तो रास्ते के उपर से मैं सब नजारा देखा करता था। परन्तु.....

मेहल(मेल)- ठीक कह रहे हो दाऽऽ। मैं भी पककर काला सफेद छोटे-छोटे बिन्दी लिए और कुछ बिरादरी तो उबले आल की तरह होते थे। जिसे बच्चे बहत पसन्द करते थे, आज वो बच्चे कहाँ गए होंगे? क्या वह दिन फिर आएगा?

बमभौल् (पहाड़ी जामून)- नहींऽऽ नहीं है मित्र कभी नहीं आ सकता समय मैंने भी देखें जब बच्चे मेरे ढूंढ में निकलते खूब छककर खाते और आनन्दित होते थे, आज टेड़ी नजर से भी नहीं देखते हैं काफल- मित्रो, समय की बलिहारी है हम तो सदैव उनका आहार में शामिल होकर बहुत सारी विटामिन देने का कार्य भी करते रहे उनके रक्षक बने। जिस दिन समझ आएगा मानव आप लोगों को याद अवश्य आयेगा।

हिसालू- वो तो ठीक है, पर इतनी बेरूखी, कभी हम भी नीले-काले विरादर उनके कितने प्यारे थे. आज हम अपने जगंली साथी चिड़िया, कीट-पंतग तक रह गये। अब मानव को हमारी आवश्यकता नहीं है।

काफल- दोस्तों अब अन्त में हम अपने विलुप्त साथी- 'खाने वाला बेडू व पांगर' को याद करते श्रद्धांजलि अर्पित दो मिनट मौन धारण सम्मान पूर्वक करेंगे।

हमारे अजीज मित्र 'बेडू' की याद तो आज हमें भी बहुत आती है। पानी धारे के पास, आम सड़क से नीचे छोटा-छोटा एक तना वाला कुछ ऊपर तक, फिर टहनी फैली हुई थी। स्कूल के बच्चे जहाँ छुट्टी के बाद घर पहुँचकर फिर मेरे प्रेम पर लट्टू है जाते थे। जिन छोटे बच्चों को पेड़ से सीधे नहीं मिल पाता था तो उन्हें पेड़ के नीचे खाने को भू मिल जाता था। साथी पेड़ से नीचे गिरा देते। सभी खुब छककर देर शाम प्रशन्नचित मुद्रा में ही घर चले आ जाते थे।

पांगर दा..के बिरादरी तो आस-पास के गाँव में थे ही पर 'बेडू' नज़र में दूसरा नहीं देखा था बहुत कम ही होंगे। पागंर फल का छिक्कल तो कांटेदार होता है। जिसे छिलकर अन्दर सफ़ेद मुलायम गुठली को खाया जाता था। आज न तो पांगर न बेडू खाने वाला पेड़ कहीं नहीं दिखाई देता है। अन्य फल भी अस्तित्व बचाने हेतु अपनी अपनी बातें सभा में रखते रहे। सभी को आज लम्बे समय बाद अपना दुखड़ा एक दुसरे को सुनाने का मौका मिला था किन्तु मानव की सम्वेदनशीलता तो कम होते जा रहीं हैं।

अन्त में सभी न दो मिनट मौन के साथ बेडू व पांगरु को श्रद्धांजलि अर्पित की। काफल ने भावुकता से सभा का समापन के साथ सभी का आभार व्यक्त किया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बेरीनाग में संवरेगी लला जसुली की ऐतिहासिक धर्मशाला

सौन्यर्दीकरण के लिये पर्यटन अधिकारी ने भेजा है प्रस्ताव

धर्मशाला को अतिक्रमण से बचाने के लिये सैनिक संगठन का योगदान रहा है

बेरीनाग। दानावीरांगना लला जसुली बूढ़ी शौक्याणी की थाने की निकट मुख्य मार्ग पर स्थित ऐतिहासिक धर्मशाला को संवरने का इन्तजार है।

सहा. पर्यटन अधिकारी द्वारा लला जसुली देवी धर्मशाला के सौन्दर्यीकरण के सम्बन्ध में मुख्य कार्यकारी अधिकारी उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद देहरादून को प्रस्ताव भेजा है। पत्र के अनुसार सहायक अभियन्ता ग्रामीण निर्माण विभाग का हवाला देते हुए बताया है कि इस धर्मशाला के सौन्दर्यीकरण के सम्बन्ध में धनराशि 44.88 लाख के आंगणन गठित टीएसी कराये जाने के उपरान्त अब वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृति होते ही ऐतिहासिक धर्मशाला का सौन्दर्यीकरण किया जायेगा।

बताते चलें कि दारमा घाटी की लला जसुली की ऐतिहासिक धर्मशालाओं को बचाने की मुहीम चला रहे जसुली बूढ़ी सोक्यानी धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्ध समिति बेरीनाग की इस धर्मशाला को बचाने की गुहार लगाती रही है। इसमें अतिक्रमण की आशंका को देखते हुए स्थानीय भूतपूर्व सैनिक संगठन का अमूल्य योगदान रहा है। धर्मशाला के जीर्णोद्धार की सूचना पर सैनिक संगठन के लक्ष्मण सिंह डांगी खुशी प्रकट करते हुए कहा कि ऐतिहासिक धरोहरों को बचाने में मुहीम सफल रही।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

जय लक्ष्मी ट्रान्सपोर्ट क.

ट्रान्सपोर्ट नगर

हल्द्वानी

कैलाश चन्द्र प्रेम चन्द्र

आलू, फल व सब्जी के आढ़ती

दुकान नं. बी-32, मण्डी

हल्द्वानी

मिलम बेक हाउस (नियर- टैक्सी स्टैंड चौराहा) मुनस्यारी

सम्पर्क- 8941807388

MILAM BAKE HOUSE CRAFTED IN THE MOUNTAINS

पहाड़ों में तैयार, स्वाद से भरपूर। हिमालय की वादियों से आपके स्वाद तक। आपके लिये लेकर आया है ताजे स्वादिष्ट और गुणवत्तापूर्ण बेकरी उत्पाद।

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चौकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379

APNA GHAR 6396098804

चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

नरेन्द्र सिंह रावत

सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड शासन

जय हिन्द!

80वें स्वतन्त्रता दिवस

15 अगस्त की हार्दिक शुभकामनाएँ

"समस्त देशवासियों को स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। इस अवसर पर मैं स्वतन्त्रता संग्राम के नायकों व देश की सुरक्षा में शहीद हुए सैनिकों को नमन करता हूँ। आईये, इस स्वतन्त्रता दिवस पर हम सभी मिलकर उत्तराखण्ड राज्य तथा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए संकल्पबद्ध हों।"

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

"हर देश की विकास यात्रा में एक समय ऐसा आता है जब देश खुद को नए सिरे से परिभाषित करता है। स्वतन्त्रता दिवस के इस अवसर पर हमें नये संकल्पों को आधार बनाना है, नए संकल्पों को लेकर चल पड़ना है। आइए, एक ऐसे भारत के निर्माण का संकल्प लें, जो विकसित भी हो, आत्मनिर्भर भी हो और अपनी विरासत पर गर्व भी करे।"

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

सेवा - सुशासन - समर्पण

- राज्य में सख्त नकल विरोधी कानून हुआ लागू, जिसके बाद भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता कायम होने से अब युवाओं का चयन एक से अधिक विभागों में हो रहा है।
- बीते 5 वर्षों में 34000 से अधिक युवाओं को मिली सरकारी नौकरी।
- राज्य के प्रत्येक जिले में मेडिकल कॉलेज की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित, जिसमें वर्तमान में 5 कॉलेज संचालित हैं एवं 2 अन्य कॉलेजों का निर्माण कार्य जारी है।
- राज्य में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) की कुल संख्या वर्ष 2024-25 में बढ़कर 79394 हो गई है। जो वर्ष 2021-22 में 59798 थी।
- एमएसएमई के अंतर्गत रोजगार पाने वालों की संख्या वर्ष 2025 में बढ़कर 456605 हो गई है। जो 2022 में 343922 थी।
- राज्य में स्टार्टअप की संख्या 2024-25 में बढ़कर 1750 हो गई है। जो 2017 तक शून्य थी, और वर्ष 2021-22 में 702 थी।
- राज्य सरकार द्वारा शुरू की गई मुख्यमंत्री कौशल उन्नयन एवं वैश्विक रोजगार योजना। इस योजना का बजट बढ़ाकर ₹ 75 लाख से ₹ 3.3 करोड़ किया गया। 147 बच्चों को अब तक विदेशी भाषा का दिया गया प्रशिक्षण एवं 92 बच्चों को विभिन्न देशों में रोजगार मिला है।
- पी.एम.श्री योजना के अन्तर्गत प्रथम चरण में राज्य के 141 विद्यालयों, द्वितीय चरण में 84 विद्यालयों को चयनित किया गया।
- देश में सबसे पहले राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 लागू करने वाला राज्य बना उत्तराखण्ड।
- मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना की हुई शुरुआत।
- राज्य में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने हेतु लैब ऑन व्हील कार्यक्रम का हो रहा संचालन। सभी जिलों में खोले जा रहे विज्ञान केंद्र।
- प्रतियोगी परीक्षाओं तथा विभिन्न प्रतिष्ठित उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश हेतु तथा योग्यता निर्धारण के लिए होने वाली परीक्षाओं (केट, मेट, गेट आदि) की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए निःशुल्क ऑन लाईन कोचिंग हेतु मुख्यमंत्री युवा भविष्य निर्माण योजना के संचालन को मिली मंजूरी।
- राज्य में पहली बार राष्ट्रीय खेलों का हुआ आयोजन। 38वें राष्ट्रीय खेल में उत्तराखण्ड के खिलाड़ियों ने 103 पदक जीतकर बनाया नया रिकॉर्ड।
- हल्द्वानी में राज्य के पहले खेल विश्वविद्यालय और लोहाघाट में महिला स्पोर्ट्स कॉलेज की हो रही स्थापना।
- स्टेट स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी गौलापार एवं महिला स्पोर्ट्स कॉलेज के संचालन के लिए विभिन्न पद कैबिनेट ने किए स्वीकृत।
- नई खेल नीति के तहत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेताओं को सरकारी नौकरी में समायोजित करने का ऐतिहासिक फैसला।
- मुख्यमंत्री खेल विकास निधि, मुख्यमंत्री खिलाड़ी प्रोत्साहन योजना, मुख्यमंत्री उदीयमान खिलाड़ी उन्नयन योजना तथा खेल किट योजना जैसी विभिन्न योजनाएं हो रही संचालित।

विकास भी, विरासत भी

- राज्य के खिलाड़ियों का दैनिक भोजन भत्ता 250 रुपए से बढ़ाकर भारतीय खेल प्राधिकरण की भांति 480 रुपए प्रतिदिन, प्रति खिलाड़ी किया गया।
- उत्तराखण्ड फिल्म नीति के तहत FTII से पासआउट युवाओं को मिली छात्रवृत्ति। पाठ्यक्रम पर हुए व्यय के अनुसार एसटी, एससी, ओबीसी को 75 प्रतिशत एवं सामान्य अभ्यर्थियों को 50 प्रतिशत की छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही।
- मुख्यमंत्री उदीयमान खिलाड़ी उन्नयन योजना के अंतर्गत 8 से 14 वर्ष के प्रदेश में करीब 3900 उभरते खिलाड़ियों को दी जा रही 1500 रुपये प्रतिमाह की खेल छात्रवृत्ति।
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं (जैसे ओलंपिक, एशियाई खेल, राष्ट्रमंडल खेल आदि) में पदक जीतने वाले या भाग लेने वाले खिलाड़ियों को राजकीय सेवाओं में 4 प्रतिशत खेल कोटे का मिलेगा लाभ।
- भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिये भ्रष्टाचार मुक्त एप 1064 किया लांच। 1905 सी.एम. हेल्पलाइन नंबर से जनता को मिल रही सहूलियत।
- नीति आयोग के निवेश अनुकूलता सूचकांक-2026 में उत्तराखण्ड को पर्वतीय एवं पूर्वोत्तर राज्यों की श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त।
- स्वतंत्र भारत के इतिहास में समान नागरिक संहिता लागू करने वाला देश में प्रथम राज्य बना उत्तराखण्ड।
- राज्य में सशक्त भू-कानून, सख्त धर्मान्तरण विरोधी कानून एवं दंगारोधी कानून हुआ लागू।
- राज्य आंदोलनकारियों के लिए सरकारी नौकरियों में 10 प्रतिशत एवं राज्य में महिलाओं के लिए सरकारी नौकरियों में 30 प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण हुआ लागू।
- राज्य में उत्तराखण्ड राज्य अल्पसंख्यक शिक्षा प्राधिकरण का हुआ गठन, इसके अंतर्गत मदरसा बोर्ड खत्म होने के बाद प्राधिकरण तय करेगा पाठ्यक्रम। यह प्राधिकरण अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थानों को मान्यता प्रदान करेगा।
- शहीद सैनिकों के आश्रितों को मिलने वाली अनुग्रह राशि को 10 लाख से बढ़ाकर किया 50 लाख रुपए।
- परमवीर चक्र विजेताओं की अनुग्रह राशि 50 लाख से बढ़ाकर की गई 2 करोड़।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी

www.uttarainformation.gov.in | DIPR_UK | UttarakhandDIPR | UttarakhandDIPR

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)